17/3/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ओम् नमः शिवाय.....

(तुम मात–पिता, हम) बालक तेरे, वो तो ज़रूर परमपिता परमात्मा की ही महिमा हुई। इसको कहा जाता है क्लीयर महिमा; क्योंकि वो रचता है। लौकिक मात–पिता भी रचता है। उसको भी मात–पिता कहा जाता है, फिर परलौकिक को भी ऐसे ही कहा जाता है। तुम बंधु–सहायक फलाना उसकी बहुत महिमा है। लौकिक बाप–माँ की इतनी महिमा नहीं है– तुम बंधु–सहायक फलाना। कुछ भी नहीं। अभी ये किसकी महिमा हुई? ये हुई परमपिता परमात्मा की। महिमा उनकी अलग है। इसलिए ज़रूर उनमें जो महिमा है, शिवबाबा की महिमा कोई थोड़ी नहीं है। शिवबाबा की तो देखो बाप ने बहुत ही समझाया है, बच्चे भी उनकी महिमा करते हैं कि ज्ञान का सागर है। अंग्रेजी में कहा जाता है– नॉलेजफुल है यानी उनमें ही ज्ञान है। नॉलेज का मतलब कोई ये पढ़ाई नहीं (है), जो देशी पढ़ाई होती है शरीर निर्वाह के लिए। जबकि ज्ञान–सागर कहा जाता है, नॉलेजफुल कहा जाता है तो ज़रूर उनमें ज्ञान की नॉलेज बहुत है। क्या चीज़ का ज्ञान ? सारे सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है उसको कहा जाता है ज्ञान। सब कुछ वो जानते हैं। ये नॉलेज है उसमें। अभी नॉलेज का अर्थ ही है उसका ज्ञान। ज्ञान का सागर, फिर उनको देखो पतित–पावन। अभी पतित–पावन कृष्ण को नहीं कभी कोई कहेंगे। न उनको कोई ज्ञान का सागर कहते हैं। उनकी महिमा बिल्कुल ही न्यारी है। अभी दोनों ही हैं भारत के निवासी। शिवबाबा, वो भी तो भारत में उनकी महिमा गाते हैं; क्योंकि जयंती भी यहाँ गाते हैं। शिवरात्रि या जयन्ती... । अभी कृष्ण की भी जयन्ती गाते हैं और गीता की भी जयन्ती गाते हैं। अभी तीन जयन्ती का है मुख्य। अभी ये प्रश्न उठ्ता है कि पहले किसकी जयन्ती हुई होगी? शिव की जयन्ती हुई होगी या श्रीकृष्ण जयन्ती हुई होगी या उनके बाद गीता जयन्ती हुई होगी? देखो, ये बच्चों को बुद्धि में रखना होता है; क्योंकि बाप को भूल गए हैं। अभी शिव जयन्ती, कृष्ण जयन्ती और गीता जयन्ती– ये मुख्य जयन्तियाँ यहाँ भारत में मनाते हैं। उसमें कृष्ण की जयन्ती बड़ी धाम–धूम से मनाते हैं, बड़े प्यार से मनाते हैं और शिव की जयन्ती का कोई पता नहीं है। कुछ भी कोई भी गायन इतना नहीं है। कॉलेज वगैरह बंद...क्योंकि उनकी जयन्ती, उनकी बायोग्राफी को कि उसने क्या आ करके किया, वो कोई को भी पता नहीं है। कृष्ण ने क्या आ करके किया, वो तो बहुत ही चटपट लिखी हैं– गोपियों को चुराया, हरण किया, फलाना किया। उनके तो ढेर। कृष्ण के चरित्रों की तो एक मैगजीन निकलती है। तुम देखते हो कि यहाँ आती है एक। उसमें कृष्ण ने ये किया, कृष्ण ने ये किया, सारा कृष्ण के ही चित्र– किसको मारा, किसको क्या किया, गोपियों को...फलाना किया। शिवबाबा की कोई मैगजीन है नहीं। उनका कोई भी चरित्र पता भी नहीं है एकदम। अच्छा, अभी दोनों के लिए पता तो भारतवासियों को है नहीं कि भला शिवजयन्ती कब, फिर कृष्ण जयन्ती कब और गीता जयन्ती कब। अगर कृष्ण की जयन्ती कहते हैं तो ज़रूर कृष्ण जब बड़ा हो, बचपन तो दिखलाते हैं कि उनको टोकरी में डालकर पार ले गए हैं कंस के डर से। अभी गीता तो उस समय में नहीं सुनाएँगे। गीता तो जब वो बड़ा होवे, कम से कम ... वर्ष का हो तब तो गीता सुनावे ना। देखो दिखलाते भी हैं, रथ के ऊपर खड़ा हो करके...। ज़रूर 16/17 वर्ष का दिखलाई पड़ता है। बुजुर्ग बना हो, बड़ा बना हो तब तो ज्ञान सुनावे ना। तो ज़रूर गीता भी बहुत समय के बाद सुनाई होगी, ऐसा विचार होता है। अभी शिव ने क्या किया तब यहाँ ? उनका तो कोई पता ही नहीं है बिल्कुल ही। तो देखो, अज्ञान नींद में सोए पड़े हैं ना। तो बाप आ करके जगाते हैं कि भला मेरी तो कुछ शिवजयन्ती बतावे कि मैंने क्या आ करके किया। तभी बाप आ करके बच्चों को समझाते हैं कि मुझे ही तो पतित–पावन कहते हैं और मैं जब आता हूँ तो मेरे साथ गीता है; क्योंकि मैं आ करके साधारण बुड्ढे तन में, जो अनुभवी भी हैं बहुत.

....गीता वगैरह सब पढ़े हुए हैं। .....पीछे राम नवमी तो है। त्रेता वाला राम उसके पीछे हुई ; क्योंकि इस समय में जो कुछ हो जाता है पीछे उनकी मनाई जाती है। अभी इस समय में बाप बैठ करके सबको समझाते हैं कि पीछे तो कोई जयन्ती किसकी होती नहीं है; क्योंकि सर्यूवंशी वर्सा लेते हैं, चंद्रवंशी वर्सा लेते हैं। वहाँ दूसरे कोई की भी आने की या किसकी कोई महिमा नहीं है। सिर्फ वो राजाएँ हैं, उसका कॉरोनेशन मनाते होंगे। और उनका क्या मनाएँगे! बर्थ डे तो सबकी होती ही है। सो तो यहाँ आजकल सबकी मनाते हैं। चलो, .... सूर्यवंश राजाई चली, उसमें दूसरी कोई महिमा की तो बात ही नहीं है। ऐसी कोई बात हुई ही नहीं। सुख का राज्य सतयुग–त्रेता में चलाया। अभी ये तुम बच्चों को बैठ करके रियलाइज़ कराते हैं यानी समझाते हैं, बुद्धि में ले आते हैं कि कैसे तुम्हारा राज्य स्थापन हुआ था। कल्प–2 के संगम पर आता हूँ; क्योंकि मैं आऊँगा भी संगम पर; क्योंकि पतित–पावन जो कहे जाते हैं तो संगम ही होता है। कलहयुग का अंत पतित सतयुग की...। कहते ही हैं– हे ज्ञान का सागर, पतित–पावन आओ। तो ज्ञान भी देता हूँ, सब कुछ देता हूँ और बाप भी हूँ। वर्सा भी दूँगा ज़रूर बच्चों को। बरोबर दिया भी था। फिर इस समय में कहते हैं ना– तुम बच्चों को वर्सा दिया था। ...बाप भी कहते हैं जैसे बच्चे पढ़ते हैं ऐसे मैं आ करके पढ़ाता हूँ, समझाता हूँ और कल्प पहले मुआफिक ये मेरे बनने ही हैं। आ करके मेरे बन करके कल्प पहले मुआफिक नंबरवार जैसे–2 आते हैं तैसे इन बच्चों को ये पढ़ना ही है। तो पहले–2 यही समझाना पड़े..... गीता की जयन्ती पीछे नहीं कह सकते हैं अगर कृष्ण को गीता का भगवान बनावे तो। तो फिर कृष्ण जयन्ती, पीछे बहुत वर्ष के बाद गीता जयन्ती हो सके। तो ये समझ की बात है ना। शिव जयन्ती के बाद फट से है गीता जयन्ती। ये भी बच्चों को बुद्धि में प्वाइंट्स रखनी हैं ना; क्योंकि प्वाइंट्स तो ढेर मिलती हैं। सब तो कोई की बुद्धि में ऐसे बिगर लिखे या बिगर नोट किए...। हाँ, कोई ऐसे भी बच्चे हो सकते हैं, जिनको(जो) नोट करते हैं; परन्तु बाबा खुद समझते हैं ये जो बैठकरके रथ है, जो नज़दीक में है, वो भी कहते हैं– देखो, मैं तो कुछ प्वाइंट्स लिखता नहीं हूँ। अभी मैं खुद भी कहता हूँ कि सभी प्वाइंट्स समय पर याद आवे ये बड़ा मुश्किल है। इसलिए मुख्य–2 प्वाइंट्स कैसे देते हैं ये एक तो उनको हमेशा दो बाप का बैठकर समझाओ, ये प्वाइंट्स...। जो कल्प–2 देता हूँ वही आ करके राजयोग का ज्ञान देता हूँ। योग भी सिखलाता हूँ। योग किसलिए सिखलाता हूँ? अभी ऐसा योग तो और कोई सिखला नहीं सकेंगे ना। ये है भारत का प्राचीन योग। किसने सिखलाया? अभी शिवबाबा का नाम तो है नहीं। एक तो कहते हैं गीता वाला कृष्ण ने, पीछे पतंजली ऋषि, कोई फलाना ऋषि। ऐसा कोई नहीं कहते हैं कि शिवबाबा ने सुनाया या राजयोग सिखलाया। ...कोई को मालूम नहीं है। बाप बैठ करके अच्छी तरह से बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे, ये भारतवासियों को, जो भी मिले, उनको समझाओ– पहले तो ये तो खयाल करो, जयन्ती का तो ख्याल करो; क्योंकि गायन तो उनका है– सर्व का सद्गति दाता। अंग्रेजी में भी कहा जाता है उनको– लिबरेटर और गाइड। ....वहाँ वापस जाने का सो गाइड चाहिए आत्मा। आत्मा को परमात्मा चाहिए। फिर वो भी तो परम आत्मा है। वो बोलते हैं जैसे मनुष्य का गाइड मनुष्य होता है ना, ले जाते हैं यात्रा पर, तैसे आत्मा का गाइड फिर आत्मा चाहिए। अभी वो कौन–सी आत्मा, किसकी आत्मा होगी? वो तो सुप्रीम आत्मा होगी ना। शिवबाबा की आत्मा ठहरेगी। बाकी तो जो यहाँ ये मनुष्य हैं, वो तो पुनर्जन्म लेते हैं, वही पतित हो जाते हैं। इन पतित को पावन करके फिर वापस में कौन ले जावे? तो बाप बैठकर समझाते हैं– देखो, मुझे बुलाते है और मैं आता हूँ और आ करके पावन बनाने की युक्ति सिखलाता हूँ– मुझे याद करो। अभी कृष्ण ने ऐसा तो नहीं कहा है कि मेरी आत्मा को याद करो। ऐसे तो नहीं कहेंगे ना। उसमें लिखा है मामेकम्, अभी देह का संबंध छोड़, उनको(वो) अपने ही पतित, अपने ही 84 जन्म

भोगते हैं। वो देह का संबंध ...पहले उनको छोड़ना पड़े ना। उनको तो अपनी देह है नहीं। तो बाप अभी बच्चों को सन्मुख बैठ करके कहते हैं ना– अभी तुम्हारी रूहानी यात्रा है, सो रूहानी बाबा ही सिखलाएँगे। इसी को कहा जाता है– स्प्रिच्युअल फादर का स्प्रिच्युअल नॉलेज यानी रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नॉलेज। कृष्ण को(ई) सबका रूहानी बाप थोड़े ही हुआ। सबका रूहानी बाप मैं हूँ। सब मुझे बुलाते हैं। मुझे याद करते हैं। तो मैं ही गाइड बन सकता हूँ। मनुष्य तो गाइड भी नहीं बन सकते हैं। मेरे लिए कहते हैं कि लिबरेटर भी है, गाइड भी है, फिर नॉलेजफुल भी है, ब्लिसफुल भी है, पीसफुल भी है, प्योर भी है। प्योरफुल भी है, ऐसे कहेंगे उनको। बच्चों को तुम आत्माओं ये नॉलेज दे रहे हैं। इनमें भी तो नॉलेज इसी शरीर द्वारा दे रहे हैं। तुम आत्माओं को भी नॉलेज मिलनी है। शरीर तो तुमको छोड़ना है। तुम इस शरीर द्वारा नॉलेज ले रहे हो। बाप कहते हैं कि मैं इस शरीर द्वारा तुम आत्माओं को नॉलेज दे रहा हूँ। इसको ही कहा जाता है ; बस ये तो एक ही दफा होती है ना। एक ही देने वाला ठहरा। वो है फादर, जिसको कहा जाता है गॉड फादर। अभी फादर (का भी) रूप बताया बच्चों को कि जैसी आत्मा है पिचकड़ी ...। ये जो कुदरत–3 गाते हैं ना बहुत ही गायनों में, फलाने में। अभी कुदरत ये है बड़ी। ये ड्रामा कैसे बना हुआ है और जो पार्टधारी एक्टर्स हैं, उनमें जो आत्मा है और परमपिता परमात्मा की भी जो आत्मा है वो भी उतनी बड़ी है। ....किसकी भी छोटी–मोटी तो है नहीं। तो ये है कुदरत कि एक इतनी स्टार में ये 84 जन्म का पार्ट ; क्योंकि है बाप को भी जन्म, बहुत पार्ट ; क्योंकि जब भक्तिमार्ग हो तभी वो तुम्हारी सर्विस करते हैं। अच्छा, सिर्फ जब सुख में हो तब वो शांत में हैं। बाकी तुम्हारी आत्मा उनमें तो जैसे कि सबसे जास्ती पार्ट भरा हुआ है। 84 जन्म का...और अविनाशी। इसको कहा जाता है कुदरत। बस, इनका कोई वर्णन कैसे करे, बड़ाई कैसे करे ? नहीं, इसमें ड्रामा, ये छोटी–सी चीज़। वो तो मनुष्य बैठ करके नाटक करते हैं। ये आत्मा में कैसा भरा हुआ है! ये है कुदरत। ये जब कोई सुनेंगे तब इसमें वण्डर खाते हैं। ये है तो ज़रूर बरोबर, ड्रामा भी बना–बनाया हुआ है और बरोबर आत्मा ही पार्ट बजाती है। आत्मा है भी बिल्कुल स्टार के मिसल और उसमें ये अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है। इस पार्ट में कभी भूल–चूक हो ही नहीं सकती है कदाचित्। जो जिसकी एक्टीविटी है वो 84 जन्म एक्यूरेट भोगता है। सुख भी 21 जन्म एक्यूरेट वही भोगेंगे जो कल्प–2 भोगते हैं। दुःख भी जब माया–रावण का राज्य आता है, तब भी दुःख थोड़ा–बहुत जो कुछ भी पार्ट बजाते हैं, वो भी तो एक्यूरेट पार्ट बजाएँगे। इसको कहा जाता है कुदरत और फिर बाप भी एक्टर। उसकी भी ये कुदरत कि वो जिसको इतना बड़ा बोलते हैं, वो भी है.. सिर्फ आत्मा। उनमें ये नॉलेज भरी हुई है जो बैठ करके अभी ये बच्चों को सारी समझाते हैं कि सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। अभी ये बातें तो नई बात हुई ना। तो नई बात बच्चों को धारण करनी पड़ती है और मनुष्य तो ज़रूर नई समझ करके कहेंगे– ये तो इनकी पता नहीं, ये तो कभी शास्त्र वगैरह भी नहीं है। तो ज़रूर विघ्न पड़ेंगे ना। तुम्हारी यहाँ बिल्कुल ही नई। नई होते हुए भी, देखो जिन्होंने कल्प पहले सुनी है और अपना वर्सा लिया है, वो आहिस्ते–2 वृद्धि को पाते रहते हैं। देखो, सेन्टर्स खुलते रहते हैं और उनमें से नए–2 आते रहते हैं। टाइम लगता है; परन्तु ऐसे मत समझो इसको टाइम लगता है, बनते नहीं हैं। नहीं, बनते ढेर हैं। ये जो भी प्रजा बनती है ना, वो तो ढेर बनती जाती है। सिर्फ मेहनत है ... ये राजा बनने के लिए। उनमें बड़ी मेहनत लगती है; क्योंकि विश्व का मालिक बनना ये ऊँच ते ऊँच पद है ना। वो तो फिर भी प्रजा है ना। ये तो राजा मालिक बनना है ना। तुम ये तो समझते हो अज्ञान काल में भी जब मनुष्य बहुत–2 दान–पुण्य करते हैं तभी राजा के घर में जन्म लेवे। तो राजाई का बहुत है क्या? प्रजा बहुत है। तो ज़रूर ड्रामा में पार्ट फिर अज्ञान काल में भी राजाओं का है जो बहुत दान–पुण्य करते हैं। तभी बड़े घर में बहुत

पैसा खर्च करते होंगे। तो उसमें भी बहुत खर्चा करते होंगे। गरीब भी.....राजा जाकर बनता होगा। ऐसे मत समझो कि नहीं। समझो कोई भील है, बिचारे के पास है ही थोड़े पैसे और पूरा भगत है; क्योंकि ये पूरे भगत होते हैं, जिसको रिलीजियस माइण्डेड कहा जाता है। वो दान–पुण्य बहुत करते हैं। उसमें भी जो गरीब होते हैं वो जो अच्छी तरह से दान–पुण्य करते हैं; क्योंकि साहूकारों से तो पाप जास्ती होता है, गरीबों से...। तुम देखेंगे ना बच्चे तीर्थ यात्रा पर जाते हैं, तुम(ने) देखा है कैसे आगे असुल जाते थे। कवाटियों में बैठ करके, बुड्ढियों की भी कवाटियों में बैठ करके पैदल जाते थे श्रद्धा वाले। वो तो घोड़े और गाड़ियों में भी जाते थे। ऊँट पर भी जाएँगे। गरीबों में श्रद्धा बहुत होती है ना। तो वो गरीब जो थोड़ा भी दान करते हैं और बहुत प्रेम से करते हैं, भावना से करते हैं। ये जो कोई भी भगत सुनाए गए हैं भक्तिमार्ग (में) ये सभी साधारण (हैं); क्योंकि ये भगत होते हैं, जो बहुत भक्ति...– दर्शन दो, ये दो, नहीं तो हम गला काटते हैं। ये गला काटने वाले सभी गरीब होते हैं, कोई साहूकार नहीं होते हैं। साहूकारों को तो अपना वो होता है पैसे का, धन का। वो जल्दी काशी करवट नहीं खाते हैं। ये सब गरीब। साक्षात्कार वगैरह सब गरीबों को होते हैं। वही फिर दान–पुण्य भी जास्ती करते हैं देवताओं के आगे सब कुछ। तो फिर वही जा करके राजाएँ भी बनते होंगे; क्योंकि पैसे वालों का कोई सुख है ना। उनको तो सुख मिलता ही है। गरीबों को तो सुख कहाँ से मिले? ....अब भक्तिमार्ग में भी गरीब जाकर दान–पुण्य करते हैं तो राज पद...। वो है तो एक जन्म के लिए, सो भी अल्पकाल क्षणभंगुर सुख। यहाँ गरीबों को मिलता है 21 जन्म के लिए सुख। तो भी तुम देखते हो कि गरीब जास्ती। वो सब पिछाड़ी में आएँगे। जब अभी हिस्ट्री और बाबा जो समझाते रहते हैं कि ये समझना चाहिए कि भारत जो इतना ऊँचा था, वो ऐसे कैसे गति को पाए हैं! क्या हुआ? कोई लड़ाइयाँ–वड़ाइयाँ तो नहीं हुईं? ये इतना गरीब कैसे हो गए? इतना सब धन–मिल्कियत, इतने महल कहाँ गए? भले वो समझते हैं कि ये अर्थक्वेक्स हुई होंगी उसमें सभी चले गए होंगे; पर ये भी अर्थक्वेक्स कैसे हुई, क्यों हुई, इसका भी कारण चाहिए ना। कि रावण का राज्य जब स्थापन होता है तो ज़रूर हाहाकार मचेगा ना। ऐसी चीज़ें सोने और उनके महल तो रह नहीं सकते हैं ना। आयु तो सब चीज़ की होती है ना। मकानों की भी आयु होती है। मकानों की भी आयु बड़ी रहती होगी; क्योंकि वो सोने के मकान कोई खराब तो होते नहीं हैं। चाँदी के...बनते होंगे।...देखो मार्बल का ताजमहल, कितनी इनकी बड़ी आयु है या बड़े–2 जो मुसलमानों के बने हुए हैं या किसके भी बने हुए हैं, तो अभी तलक देखो उनकी कितनी बड़ी आयु है; क्योंकि मजबूत बने हुए हैं। तो सोने के तो और ही मजबूत होंगे। ये तो आखरीन में फिर देखो मरम्मत होती रहती है; पर अच्छी तरह से खड़े हैं ना। ये ताज ऐसे कोई जाने वाला नहीं है। ये इनके यादगार भी अभी विनाश हो जाएँगे; क्योंकि ये रहेंगे नहीं, ये तो फिर से बनेंगे ना। तो देखो, जब नाटक होता है ना...। वहाँ भी दिखलाते हैं, लड़ाइयाँ वगैरह दिखलाते हैं, मकान टूट–फूट जाते हैं, किले–विले तोड़ डालते हैं, फिर आ करके मकान देखो तो फिर वही मकान बने रहते हैं। वो ऐसे–2 चीज़ों का वो भी बनाते हैं। उस समय में देखने में आते हैं– मकान टूटते हैं, ये होता है, ये होता है, फिर आकर देखो तो फिर वही किले, वही बात, वही सब चीज़ होती है। तो उन नाटक वालों की बनावट ही ऐसी होती है। उनको फिर बनाना पड़ता है ना। टूटती है तो फिर बनाते हैं। ये भी ऐसे ही है कि जो खतम हो गए हैं, कुछ भी नहीं हैं। देखो, दिलवाला मंदिर में तो फिर बनाना पड़ेगा ना। ऐसे तो नहीं फिर कहाँ से निकल आएगा। तो अब वैसे ही फिर जब स्वर्ग का समय होगा तब जैसे कल्प पहले बनाया होगा ऐसे बनाएँगे। ऐसे तो नहीं साक्षात्कार कराएँगे कि देखो, मिस्त्री लोग मकान कैसे बनाते हैं। ऐसे तो नहीं सुनाते ना। बाकी हाँ, ये ज़रूर है कि बनाएँगे। ये तुम बच्चों को साक्षात्कार होता है– वहाँ के महल कैसे बने हुए थे। सो भी

आगे चलकर तुमको और ही अच्छा साक्षात्कार होगा, ऐसे विवेक कहता है। समझ में तो आता है ना। इन बातों से भी तुम बच्चों का कोई ताल्लुक तो नहीं है। बच्चों का ताल्लुक है पूरी पढ़ाई पढ़ना। वो तो समझते हैं– हम पढ़ते ही हैं ये स्वर्ग का मालिक बनने। तो ज़रूर स्वर्ग नया बनेगा, नया बना था। स्वर्ग पास्ट हो गया है और कोई एक दफा थोड़े ही पास्ट हुआ है। इन्यूमरबल टाइम्स स्वर्ग पास हुआ है और नर्क पास हुआ है। तो अभी नर्क पास हो गया है और अभी स्वर्ग की स्थापना। स्वर्ग और नर्क दोनों पास हो गया है। अभी है संगम। ये तुम बच्चे जानते हो ना कि इस समय में पास हो गया है। सतयुग में ये तो नहीं होगा (कि) पास्ट हो गया है, वहाँ कुछ ये नॉलेज होगी बच्चों को। नहीं। ये इस समय में, सो भी सिर्फ तुम बच्चों को पूरी नॉलेज है। वो मनुष्य जानते हैं कि बरोबर सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग– ये पास्ट हो गए हैं। कब और कैसे– वो उनको मालूम नहीं है। पास्ट हो गया है, ये क्यों नहीं उनको मालूम है? वो जानते हैं, समझते हैं कि बरोबर ये पास्ट में पैराडाइज़ था, फलाना था, ये लक्ष्मी–नारायण का राज्य था; पर वो कब–कैसे, वो उनको मालूम नहीं है; इसलिए कोई भी समझाय नहीं सकते हैं। नहीं तो अगर मालूम होता तो समझा... ये लक्ष्मी–नारायण को राज्य कैसे, किसने दिया था। ये कोई को मालूम है– लक्ष्मी–नारायण का राज्य कैसे...। कोई भी नहीं। अभी तुम बच्चों को मालूम है ना कि श्री लक्ष्मी और नारायण को सतयुग में ये जो राज्य किया, ये कहाँ से प्राप्त किया, किसने दिया, किससे ये इनहेरीटेंस पाया। इसके आगे तो कुछ था ही नहीं, ठिक्कर–ठोबर था। ये कैसे पाया? तो देखो, ये खुद जा करके बनाते हैं। यहाँ से पढ़ाई पढ़कर, लायक बनकर, फिर वहाँ बनाने के लिए तो आपे ही बनाएँगे। बैरिस्टर वगैरह भी पढ़ते हैं। जब इनको घर बनाना होगा तो आपे ही जाकर बनाएँगे। वो बना हुआ तो नहीं मिलेगा ना। आपे ही बड़े–2 हास्पिटल फलाना बनाएँगे। तुम्हारा धंधा ही क्या है? तुम्हारा धंधा है मनुष्यों को, जो घोर अंधियारे में हैं, उनको ज्ञान में आ करके सुजाग करो, उनको रास्ता बताओ। तुम्हारा धंधा ही ये है। जैसे बाबा बैठकर प्यार से सब बच्चों को समझाते हैं। उनमें देह–अभिमान की तो दरकार ही नहीं है। देखो, बाबा को तो देह–अभिमान हो ही नहीं सकता है; क्योंकि उनकी देह ही नहीं है। तुमको देह–अभिमान होता है, तो तुमको इस देही–अभिमानी बनने में मेहनत भी होती है। देह–अभिमानी होने से ही तुम अपनी भी सत्यानाश कर देते हो तो दूसरे की भी सत्यानाश कर देते हो। देही–अभिमानी बनकर तुम राज़ बैठकर समझाएँगे तो अपना भी कल्याण करते हो तो दूसरे का भी कल्याण करते हो। देखो बरोबर, जो यहाँ अपन को देही–अभिमानी समझ करके और सारा बाप का परिचय बैठकर देते हैं और जैसे बाप कहते हैं– बच्चे, तुमको गुणवान बनना चाहिए। .....काम है, क्रोध है, फलाना है, ये सभी हैं देह–अभिमान की ...। देह(भान) आता है, पीछे सब शुरू होता है। किसको बुरा कहना, किससे लड़ना, किससे झगड़ना या देह की एकदम बहुत नवाबी चलना। नहीं। ये देह को तो, बाबा बोलते हैं ना– भले राजयोग है, इसमें कोई संशय नहीं है, तो भी तुमको साधारण रहना है, नहीं तो थोड़ी भी चीज़ में अहंकार आ जाता है। घड़ी पहनते हो उनमें भी तुम बच्चों को अहंकार होता है। क्यों? अच्छा, घड़ी फैशनेबुल न रही, दूसरे को देखा। ....बस फैशनेबुल घड़ी किसकी देखी और सुनी होगी ना, तो उनको ये ख्याल रहता होगा– कब ये फैशनेबुल घड़ी मिले जो हम पहनें। इसको भी कहा जाता है देह–अभिमान। पेन देखो, पेन लेते हैं, अभी कितनी अच्छी पेन होगी जो सम्भाल रखनी पड़ेगी। रुपये डेढ/बारह आने की पेन होगी तो ये सम्भाल क्या है! अच्छा है, कोई हर्जा नहीं है। तो उनमें मोह नहीं जाएगा। पेन अच्छी होगी ...सम्भाल... । अच्छा, सम्भालते हैं, पेन में मोह रखते हैं, उस समय में शरीर छोड़े तो जा करके छी–2 बनेगा ; क्योंकि फिर भी कोई जिस्मानी चीज़ में ध्यान रखा ना। कोई जाती है, कितना एक/दो को उल्हाना देते हैं– तुमने चोरी की होगी, फलाने की..... तो कुछ

भी नहीं कह सकेंगे। तो ये जो देह–अभिमान की आदतें पड़ी हुई हैं– मैं पार्कर पेन, मैं फलानी पेन, मैं फलानी चीज़, मैं साड़ी ऊँची पहनूँ– ये सभी तो देह–अभिमानी हैं। इनमें फिर ज्ञान की ठहरिश हो नहीं सकती है। फिर सर्विस के बदले में डिससर्विस ज़रूर करेंगे; क्योंकि देही–अभिमानी नहीं हैं ना। मूल बात है, ये जो मरे हैं, पतित बने हो सो देह–अभिमान के कारण। रावण ने आ करके देह–अभिमानी बनाय दिया। इस समय में बड़ा सादा। देखते हो, बाबा है, सादा रहते हैं। कहते भी रहते हैं। तो नहीं, वो अहंकार गिरने का छोड़ते ही नहीं हैं। तो फिर समझा जाता है इनकी तकदीर में इतना कुछ देखने में नहीं आता है। हर एक की सर्विस देखी जाती है। देखो, बाबा सर्विस पर भेज देते हैं। ये तो बच्चों को समझाया कैसे समझाओ शिव की, कृष्ण की, फलाने की, फिर भारतवासी गिरे कैसे हैं, रावण–राज्य कैसे, कब से शुरू होता है। कोई दुनिया को थोड़े ही मालूम है कि रावण–राज्य कब से शुरू होता है; क्योंकि द्वापर की भी आयु बहुत लम्बी–चौड़ी रख दी है। अभी ये तो तुम बच्चों को बहुत अच्छी तरह से समझाय दिया है। तो अभी अपनी ही महारथियों की शो करनी चाहिए। महारथी कोई छीपे नहीं रहते हैं। देखते रहते हो कि जो भी अच्छे देखने में आते हैं, ये फलाना भला एक महीने के लिए सेंटर छोड़ करके तो जाओ, वहाँ जा करके कुछ भाषण तो करो। ऐ मनोहर! तुम कहाँ जाकर भाषण तो करो। समझा ना। किसको दूसरे को नहीं मँगाते हैं, मनोहर को क्यों मनाते(मँगाते) हैं? क्योंकि वो इतना होशियार नहीं हैं। बाबा जानते हैं और खुद जानते हैं.....बाबा कहते हैं ना– मेरे से आ करके कोई पूछे, जैसे बाबा कथा सुनाते हैं ना– कोई साधु था, जाकर साहूकार के पास बैठा, (उनसे पूछा) कितने बच्चे हैं? बोला– भई, दो बच्चे हैं। थे 5/7। बोला– क्यों? बोला– वो कपूत हैं, वो सपूत हैं। अच्छा, इस बड़े बाबा से पूछेगा तो क्या कहेगा? इनसे भी पूछेंगे– आपको कितने...? भई हमारे पास बच्चे तो अनगिनत हैं। उनमें भी कोई सपूत हैं तो कोई कपूत हैं। जो अच्छी तरह से पढ़ते हैं, आज्ञाकारी,वफादार,फरमानबरदार ; क्योंकि ऐसे बाप का तो वफादार करना चाहिए ना। बाबा, मारो, चाहे प्यार करो, चाहे ठुकराओ। देखो, गीत भी गाए हुए हैं। यहाँ तो कुछ भी नहीं करो तो भी देखो बिगड़ते रहते हैं। बस क्यों बिगड़ते हो? फलाने ने मुझे ऐसे बुलाया कि फलाने ने तुम्हारे लिए ऐसे कहा। फलाने ने मुझे ऐसे किया.....यही तो धूतपना है ना। अगर ऐसे तुम चलते हो और इनके ऊपर आते हो तो फिर तुम मर जाएँगे एकदम; क्योंकि धूतियाँ तो तुमको मारकर गिरा देंगी, चट कर देंगी। जैसे रामचंद्र और सीता को चट कर दिया। ये धूतियों का काम था ना। तो ये दृष्टान्त है ना। तो धूतियाँ कितनी नुकसानकारक हैं, किसकी राजाई भी गुमाय देंगे। फिर ऐसे बहुत हैं जो धूतियों के कारण कई बिचारों ने भागन्ति कर दिया है। ये धूतियों के कारण उन्होंने अपनी राजाई भी गुमाय दी। ऐसे धूतियाँ यहाँ हैं। अभी तलक मौजूद हैं। उनका धंधा फिर वही रहता है, किसको कुछ कहना, किसको कुछ कहना, किसको कुछ कहना। फिर जो श्रीमत पर न चलने वाले होते हैं, उनको ही मानते हैं, अपनी सत्यानाश कर देते हैं। दिल से बिल्कुल ही उतर जाते हैं। इसको कहा जाता है ग्रहचारी। फिर बाप समझाते हैं कि इनके ऊपर ये ग्रहचारी आ गई; क्योंकि परमत पर चले तो आई ग्रहचारी। ये सभी रंग माया का है ना। तो देखो, ये माया की ग्रहचारी, नहीं तो वृहस्पत की दशा तो एकदम चली चले; परन्तु बीच–2 में माया की दशा आ जाती है। नहीं तो तुम सब बच्चों के ऊपर है वृहस्पत की दशा ; क्योंकि वृहस्पत बाबा ही तुमको बैठ करके पढ़ाते हैं। कुछ भी करना होता है तो श्रीमत पर करे, पूछ लेवे– देखो, ये बात ठीक है, हमको ये कहती है? नहीं तो माया ऐसी है, यहाँ एक/दो का एकदम... बाबा बहुत अनुभवी है कि ये एक/दो के कहने के कारण ही कितने बिचारे छोड़ करके चले गए हैं। कसम उठाया कि आपकी ही मत पर चलेंगी, आपकी बन करके, फिर दूसरे की मत पर चल करके ये अपने को खाना खराब क्यों करना चाहिए! और फिर जबकि बच्चों ने पाँच विकार दे दिया सम्पूर्ण बनने के लिए, फिर देह–अभिमान में आते ही क्यों हो, जो फिर काम,क्रोध,लोभ ये सभी तुमको सताते हैं? तो बाबा समझाते हैं खबरदारी हो करके चलते

चलो, नहीं तो बाबा ने बताया ना– माया फिरती रहती है। बाज़ रूपी माया तुम जो चीड़िया है उनके पिछाड़ी फिरती है। झट आ करके कभी किसका नाक काटकर जाती है, किसका कान काटकर जाती है, किसकी आँखें भी निकाल देती हैं। माया की ऐसी है। सो वो तो बाप देखते रहते हैं और कहते रहते हैं– बच्चे, देख करके माँ–बाप को फॉलो करो या तो जो अनन्य बच्चे हैं उनको कुछ फॉलो करो। मैं तुमको थोड़े–बहुत अनन्य बच्चों का भी नाम बता दूँगा; क्योंकि मेरे पास अनन्य बच्चे कोई बहुत नहीं हैं। बाबा से कोई ऋषि आ करके पूछे, मिसाल देते हैं– आपका बच्चा? मैं बोलूँगा ये जो 108 का दाना बनना है ना, 8 दाना, वो हैं मेरे सबसे फर्स्टक्लास आज्ञाकारी बच्चे, फिर उनके सेकण्ड क्लास में 108 जो बने हैं वो हैं मेरे सेकण्ड क्लास के आज्ञाकारी बच्चे, पीछे जो 16000 में हैं वो हैं मेरे फिर थर्ड–फोर्थ नम्बर में आज्ञाकारी बच्चे। बाकी तो सो–सो। गिनती में ऐसे कहते हैं ना बाकी सो–2 यानी यहाँ भी ऐसे–2 है। तो देखो, बाप भी ऐसे समझाते हैं ना कि बरोबर और बच्चे भी जान गए कि बाबा जो कहते हैं, कहते एकदम राइट हैं; क्योंकि चलते–2 इनको देह–अभिमान आ जाता है, पीछे इनका कुछ–न–कुछ नुकसान हो जाता है।

अच्छा चलो बच्ची, टाइम हो गया। (रिकॉर्डः– पितु, मात, सहायक, स्वामी, सखा) ये क्या है? इसको कुछ खराबी है? भूखा हो गया है? (पुनः बजा– तुम ही सबके रखवारे हो। जिसका कोई आधार नहीं, उसके तुम एक सहारे हो.....) ....गफलत हुई? कोई चाबी न दी या फलाना न किया ये टरका, ये टूटा, ये फूटा। फिर इनकी मेहनत और खर्चा भी बहुत लगता है...। ये धारणा, ये तिजोरी में बहुत अच्छी तरह से सम्भाल रखनी चाहिए और ये लिख करके फिर औरों को दान भी करना होता है। औरों को दान नहीं करते हैं तो वो दानी नहीं ठहरा। बाबा तुम बच्चों को बहुत दान करते हैं। कहते हैं तुम भी दान करना सीखो। औरों को बताओ– बाबा बहुत सहज समझाते हैं। इन दोनों के लिए भी देखो बाबा ने कोई से पूछा है– भई इसकी दरकार ? तो बोला– .... को भेजो। ...सारा बुद्धि में नॉलेज। ऊपर से ले करके 84 जन्म का चक्कर, उसमें सब आ जाता है। वो इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन भी आ जाते हैं। ये भारत की पुरानी हिस्ट्री–जॉग्रफी चाहते सभी हैं। वो तो कोई भी जानते हैं। क्राइस्ट की तो सब कोई जानते हैं; परन्तु वो जो है यहाँ की, ये कल्प की आयु लम्बी–चौड़ी रखने से...। अरे देखो, क्रिश्चियन–बौद्धियों की 2500 वर्ष, 2000, साढ़े बाइस सौ और इनकी लिख दी है लाखों वर्ष। इस समय में इतनी भी इनको बुद्धि नहीं है। अगर ऐसे लाखों वर्ष हो तो ये जो आदमशुमारी हो हिन्दुस्तान की यानी देवी–देवताएँ धर्म की, बल्कि उनको हिन्दू कहते हैं, तो कितनी होनी चाहिए? ये बहुत–2 बड़ी हो जावे। लाखों वर्ष में कितने मनुष्य पैदा होवें। सतयुग–त्रेता में ऐसे थोड़े ही है कि मनुष्य पैदा नहीं होते। एक भी पैदा हो तो भी बहुत हो जावे। तो बुद्धि मारी हुई है ना। ये विद्वान,आचार्य,पण्डित– इन सबकी बुद्धि मारी हुई है। माया ने एकदम खतम कर दिया है। माया कुछ कम नहीं है, बड़ी जबरदस्त है, तब तो बाप भी कहते हैं ना– ये माया बड़ी दुस्तर है। इन्होंने तो एकदम देखो घोर अंधियारा बना दिया है। उनको पता ही नहीं पड़ा है कि ये लक्ष्मी–नारायण यहाँ राज्य करके गए। कहते भी रहते हैं 84 जन्म भोगनी होती है। वो 84 लाख बोलने से 84 जन्म का ख्याल ही किसको नहीं आता है। ख्याल भी नहीं करते हैं कि हम कोई 84 लाख जन्मों को निकालें...। तो देखो, बाप कैसे सहज आ करके समझाते हैं। ये तुम्हारा चित्र शायद ही देते हैं। ये देखने से ही बिगड़ते हैं कि ये 5000 वर्ष का कल्प कैसे लिखा है? फिर देखो आगे चलकर कहेंगे ना। पिछाड़ी में तुम्हारी महिमा तो होगी ना। देखो, पीछे पूजन लायक तो बनती हो ना। तुम्हीं बनती हो और तुम बच्चों को मालूम पड़ा कि हम पूजन लायक बनते हैं और बहुत पूजन लायक बनते हैं।... मिट्टी का ये यज्ञ रचते हैं मिट्टी का रुद्र बनाने लाख। जास्ती में जास्ती लाख का वो बनाते हैं और लाख रोज़ बनाएँगे और जो फिर साहूकार होते हैं वो लाख। बिचारे जास्ती तो बनाय नहीं सकें। लाख कुछ कम है क्या! रोज़ लाख बनाना और तोड़ना। इसको बड़ा कहते हैं, पीछे कमती–2 ये 40 हजार, 20 हजार, 10 हजार।

10 हज़ार भी बनाना ... लगती है। सब ब्राह्मण बनते हैं। लाख में कितने ब्राह्मण बनते होंगे। सो भी उनको टाइम चाहिए। सवेल में बनाना, सवेरे में पूजा होती है, कोई शाम को पूजा नहीं होती है। ...अमृतवेले से ले करके बनाना शुरू करते होंगे तब सुबह को बैठ करके पूजा करते होंगे। उनका भी टाइम मुकर्रर होगा ज़रूर कि इतने टाइम के अंदर पूजा हो जानी चाहिए। पूजा वगैरह सब सवेल में होती है ना। ...तुमको तो सोए हुए आत्मा को जगाना है। बाप का परिचय देना है। तो वो पुरुषार्थ करके बाप से वर्सा लेवे। है बड़ी और सहज ते सहज भी है, डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। कभी–2 किसको राहू की दशा बैठ जाती है ना तो खतम कर देती है। ....ऐसी होती है, बहन से भी जास्ती। दोस्त ऐसे होते हैं जो भाइयों से भी जास्ती प्यार करते हैं। समझा ना। दोस्त ऐसे होते हैं, जो भाई भी इतना उनकी न रखे जितना दोस्त उनकी सम्भाल करे। यहाँ भी ऐसे ही है तुम ... हो ; परन्तु जो अच्छी–2 ...होती हैं ना, उनमें प्यार होता है; परन्तु रूहानी प्यार चाहिए, जिस्मानी प्यार नहीं चाहिए। बहुतों का जिस्मानी प्यार होता है ना वो बहुत खराब। वो एक/दो की सत्यानाश कर देते हैं। रूहानी प्यार हो। .....रूहानी सर्विस में भी लगी रही हो, नहीं तो जिस्मानी, वो कुछ भी काम का नहीं। हाँ, लो बच्चे।

अच्छा! हैलो, सभी शिवबाबा के रूहानी सेन्टर्स के ब्राह्मण कुलभूषण; क्योंकि सभी सेन्टर्स शिवबाबा के हैं। जो भी खोलते हैं, उनमें अगर ये अहंकार आया कि ये मैंने खोला, मेरा सेन्टर है तो ये मरा। वो गिरेगा अच्छी तरह से देह के अभिमान में। ये समझना चाहिए सभी सेन्टर वाले या सेन्टर्स खोलने वाले कि ये शिवबाबा के सेन्टर हैं, उसने खोला है। उसकी श्रीमत से मैंने सेन्टर खोला है। बाकी अपना समझेंगे, जैसे कई–2 सेन्टर वाले ऐसे समझते हैं, अहंकार है, तो वो जो अहंकारी हैं, सेन्टर खोलते हैं, वो कितना(इतना) ऊँच उठाय नहीं सकते हैं। फिर उन अहंकारियों में ज्ञान की धारणा नहीं होती है। देह–अभिमानियों में ये याद की यात्रा बहुत कम रहती है। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो याद मुश्किल करते हैं। ज्ञान थोड़ा होता है तो उसका फिर नाम रखा जाता है– ठिक्कर–कुक्कड़ ज्ञानी। उसको कुक्कड़ ज्ञानी भी कहते हैं। जिनका योग ठीक नहीं है और ये नॉलेज अच्छी तरह से फट–2 करके देते रहते हैं; परन्तु योग नहीं है वो कोई इतना ऊँच पद नहीं पाएगा। कुछ–न–कुछ नुकसान करते ही रहते होंगे; क्योंकि रूहानी नशा नहीं है। तो बाबा कहते हैं जितना योग में रहेंगे, जो ही डिफीकल्ट है बच्चों के लिए। देह–अभिमान के कारण ही ये जो देही–अभिमानी देवता थे, वो दैत्य बन चुके हैं। अगर अभी भी देवता बनना है तो देही–अभिमानी बनना पड़ेगा। ये बापदादा देख रहे हैं कि देह का अभिमान ने बहुतों का सत्यानाश किया हुआ है; इसलिए देह–अभिमान छोड़ते रहो, याद की यात्रा सवेल में, अमृतवेले या अगर प्रैक्टिस अच्छी है तो उठते,बैठते,चलते, स्नान करते बाबा को याद करते रहें तो उनमें उनका कल्याण है। तो ऐसे जो सभी सेन्टर्स के मीठे–2 बच्चे हैं; क्योंकि अभी प्वाइंट्स तो बहुत मिलती रहती है। तो जो अच्छी सर्विस करके दिखलाएँगे, फिर उनकी सभी बच्चों में वाह–2 भी निकलेगी। ऐसे नहीं कि नहीं निकलेगी। देखो, पाण्डवों की सेना तो बहुत बड़ी थी, फिर भी थोड़े–बहुत, थोड़ों का नाम दिखलाते हैं, सबका नहीं निकालते हैं। तो तुम भी पाण्डव सेना हो। जितना जो अच्छी सर्विस करेंगे, खुश भी निकालेंगे और अपने काँटों से फूलों का बगीचा बड़ा बनाएँगे वही दिल पर चढ़ते जाएँगे और उनको ही दिल होती है घड़ी–2 चिट्ठी लिखने की, प्यार करने की, याद करने की। बाकी तो जो डिससर्विस करते होंगे, वो तो समझते हैं कि बाहर से प्यार करेंगे, अंदर से नहीं करेंगे। डिप्लोमैट(कूटनीतिज्ञ) भी बहुत हैं। इसलिए बच्चों को सर्विस पर अटेन्शन देना चाहिए और जितना हो सके इतना देही–अभिमानी बनें तो सर्विस अच्छी करेंगे। अच्छा, आज गुरूवार है; इसलिए सभी सेन्टर्स के सिकीलधे, नूरे रत्नों प्रति याद–प्यार और गुडमॉर्निंग।